2 नवम्बर 2012, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-32 / 2012-14

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे

जी-जागरण पर

प्रतिदिन प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 35, अंक : 15 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

नवम्बर(प्रथम), 2012 (वीर नि. संवत्-2538) सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

15वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर सम्पन्न

जयपुर (राज.) : पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 21 से 30 अक्टूबर 2012 तक आयोजित पन्द्रहवें आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर का उद्घाटन श्री प्रकाशचन्द गंभीरमलजी जैन अहमदाबाद के करकमलों से हुआ। उद्घाटन सभा के पूर्व ध्वजारोहण श्री निहालचन्दजी घेवरचन्दजी जैन जयपुर ने एवं प्रवचन मण्डप का उद्घाटन श्री ताराचन्दजी सोगानी जयपुर ने किया।

शिविर में प्रतिदिन प्रातःकाल ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के समयसार ग्रंथाधिराज के बंध अधिकार पर मार्मिक प्रवचन हुये। डॉ. भारिल्ल के प्रवचनों के पूर्व ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना के षटकारक पर प्रवचनों का लाभ मिला।

सायंकाल सामूहिक जिनेन्द्र-भक्ति के उपरान्त गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समयसार गाथा 14-15 पर सी.डी. प्रवचन एवं प्रश्नोत्तर हुए। तत्पश्चात् रात्रिकालीन प्रवचनों में प्रतिदिन ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना के प्रवचनों के पूर्व पण्डित शिखरचंदजी विदिशा, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, डॉ. राजेन्द्र बंसल अमलाई एवं डॉ. दीपक शास्त्री जयपुर के व्याख्यानों का लाभ मिला।

शिक्षण कक्षायें - समयसार (कर्ताकर्माधिकार) पर पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल द्वारा, **गुणस्थान विवेचन** पर ब्र. यशपालजी जैन द्वारा, **नयचक्र (नैगमादि सप्तनय)व चार अभाव/पंच भाव** पर पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली द्वारा, **समयसार (गाथा 49)** पर पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर द्वारा, **क्रमबद्धपर्याय** पर पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा, **तत्त्वार्थसूत्र** पर डॉ. मनीषजी शास्त्री खतौली द्वारा कक्षायें ली गईं।

प्रातः 5.30 से प्रौढ कक्षा में पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा के प्रवचनसार पर व्याख्यान के तत्काल बाद 7.00 बजे तक जी-जागरण चैनल पर प्रतिदिन प्रसारित होने वाले डॉ. भारिल्ल के प्रवचन का प्रसारण प्रवचन हॉल में ही बड़े पर्दे पर किया जाता था।

दोपहर में बाबू युगलजी के निश्चय-व्यवहार पर सी. डी. प्रवचन के पश्चात् महाविद्यालय के छात्र विद्वानों द्वारा प्रवचन हुये। तत्पश्चात् व्याख्यानमाला के अन्तर्गत पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री 'ओजस्वी' आगरा,

(शेष पृष्ठ 4 पर...)

डॉ. भारिल्ल की जन्मभूमि -

बरौदास्वामी का होगा कायाकल्प

15वें आध्यात्मिक शिक्षण शिविर के अवसर पर दिनांक 26 अक्टूबर को ग्रामीण विकास राज्यमंत्री श्री प्रदीपजी जैन 'आदित्य' ने अपने अभिनन्दन के अवसर पर बोलते हुए डॉ. भारिल्ल को न केवल जैन समाज अपितु मानवमात्र के उन्नयन हेतु एक इतिहास पुरुष की संज्ञा देते हुए कहा कि डॉ. भारिल्ल की जन्मस्थली बरौदास्वामी हमारे लोकसभा क्षेत्र के अन्तर्गत आता है। ''मैं चाहता हूँ कि इस गांव का कायाकल्प होना चाहिये, जिस माटी में ऐसे विद्वत्पुरुष ने जन्म लिया है, वहां उनके नाम से कुछ ऐसा होना चाहिये जिससे आने वाले समय में लोग प्रेरणा लेवें। मैं यहाँ उपस्थित जैन समाज के श्रेष्ठीजनों से आग्रह करता हूँ कि वे इस दिशा में आगे बढे। मैं भी मंत्रालय के स्तर पर अधिक से अधिक सहयोग करूँगा।

इस उत्साहपूर्ण वक्तव्य को सुनकर ढाईद्वीप के कल्पनाकार श्री मुकेशजी जैन इन्दौर ने सभा को बताया कि हमारी भी यही भावना थी; अतः हमारे ट्रस्ट (कुन्दकुन्द कहान शासन प्रभावना ट्रस्ट इन्दौर) ने तो 3 वर्ष पहले ही डॉ. भारिल्ल का बरौदास्वामी वाला घर वहाँ के लोगों से खरीद लिया था और हम उसमें डॉ. भारिल्ल के नाम से एक भवन बनाकर जन कल्याण की गतिविधियाँ प्रारम्भ करना चाहते हैं। मंत्रीजी ने आज जो आदेश दिया है, हम उसे आप सभी के सहयोग से प्रारम्भ करने को तैयार हैं। श्री मुकेशजी ने करतल ध्वनि के बीच घोषणा की कि बरौदास्वामी में बनने जा रहे डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल भवन का शिलान्यास आगामी 18 जनवरी 2013 को मंत्रीजी की उपस्थिति में होगा।

बरौदास्वामी में होने वाले कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी आगामी अंकों में प्रकाशित की जायेगी।

टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक -

डॉ.वीरसागरजी द्वारा राष्ट्रपति भवन में व्याख्यान

नई दिल्ली : यहाँ राष्ट्रपति भवन में क्षमावणी पर व्याख्यान देने हेतु टोडरमल दि. जैन सिद्धांत महाविद्यालय के स्नातक डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली को आमंत्रित किया गया।

इसके अतिरिक्त माननीय राहुलजी गांधी ने जैनदर्शन की विशेष जानकारी हेतु डॉ. वीरसागरजी को विशेष आमंत्रण देकर अपने निवास पर बुलाया, जहाँ उन्होंने डॉ. वीरसागरजी से 1 घण्टे तक जैनधर्म के मूलभूत सिद्धांतों की जानकारी प्राप्त की।

सम्पादकीय – 87

पंचास्तिकाय : अनुशीलन

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

गाथा – १५७

अब प्रस्तुत गाथा १५७ में कहते हैं कि जो पर समय में प्रवर्तन करेगा, उसे बंध होगा। मूल गाथा इसप्रकार है –

आसवदि जेण पुण्णं पावं वा अप्पणोध भावेण।
सो तेण परचरित्तो हवदि त्ति जिणा परूवेंति।।१५७।।

(हरिगीत)

पुण्य एवं पाप आस्रव आतम करे जिस भाव से।
वह भाव है परचरित ऐसा कहा है जिनदेव ने।।१५७।।

आचार्य श्री कुन्दकुन्द देव मूल गाथा में कहते हैं कि जिस भाव से आत्मा को पुण्य–पाप आस्रवित होते हैं, उस भाव द्वारा वह जीव पर चारित्र है – ऐसा जिनेन्द्र भगवान ने कहा है।

आचार्य श्री अमृतचन्द टीका में कहते हैं कि यहाँ पर चारित्रवृत्ति बंध का हेतु होने से, उसे मोक्षमार्गपने का निषेध किया है, अर्थात् पर चारित्रवृत्ति मोक्षमार्ग नहीं है; क्योंकि वह बंध का हेतु है।

वास्तव में शुभरूप विकारी भाव पुण्यास्रव है और अशुभरूप विकारीभाव पापास्रव है। पुण्य या पाप जिस भाव से आस्रवित होते हैं। वह भाव जब जिस जीव को हो तब वह जीव उस भाव द्वारा परचारित्र है – ऐसा प्ररूपित किया जाता है। इसलिए ऐसा निश्चित होता है कि परचारित्र में प्रवृत्ति बंध मार्ग ही है, मोक्षमार्ग नहीं।

कवि हीरानन्दजी इसी भाव को काव्य में कहते हैं –

(दोहा)

पुण्य–पाप नित आस्रवै जा सुभाव करि लोइ।
ता सुभाव करि जीव कै, पर चारितता होई।।१९९।।

(सवैया इकतीसा)

जाही समै जीव विषैं सुभ उपराग होइ,
ताही समै भावपुण्य आस्रव कहाई है।
ऐसैं ही पाप–उपराग पाप–आस्रव कहावै,
पुण्य–पाप भाव सो तौ जीव मैं रहाई है।।
ता ही भावकरि जीव परचरित धारी है,
तातैं पर की प्रवृत्ति बंधता लहाई है।
मोक्ष पंथ बाधक है भवरूप साधक है,
ज्ञानी जीव जानि जानि आपतैं बहाई है।।२००।।

(दोहा)

परचारित तैं जगत है, नानारूप अनादि।
स्वक चारित्र जब आचरण, तब सिवसुख की अनादि।।२०१।।

गुरुदेव श्रीकानजीस्वामी अपने व्याख्यान में कहते हैं कि संसारी आत्मा में जो शुभाशुभ भाव होते हैं, वह अशुद्धोपयोग है। दया, दानादि के भावों से पुण्य के परमाणु आते हैं, हिंसा, झूठ, चोरी आदि से पाप के परमाणु आते हैं; वे सब अशुद्ध भाव हैं; वे अशुद्ध भाव परसमय का आचरण करनेवाले भाव हैं। स्वभाव से चूककर जो भी परसमय का आचरण करने वाला भाव है। स्वभाव से चूककर जो भी पर समय की प्रवृत्ति होती है, वह सब पर–चारित्र है। वह सब बंध का कारण है।

तात्पर्य यह है कि जो व्यक्ति पुण्य को भला मानता है, वह उसे छोड़ना नहीं चाहता। वह अपने शुद्ध चिदानन्द स्वभाव को छोड़कर पुण्य–पाप भावों में आनन्द मानता है। पुण्य–पाप में रुचि रखता है और मानता है कि हम धर्म कर रहे हैं, जबकि यह भ्रान्ति है।

उक्त कथन का निष्कर्ष यह है कि परद्रव्य में आचरण रूप प्रवृत्ति बंध का मार्ग है, मोक्षमार्ग नहीं। ●

गाथा – १५८

अब प्रस्तुत गाथा १५८ में कहते हैं कि स्वसमय के आचरण वाला कौन है? मूल गाथा इसप्रकार है –

जो सव्वसंगमुक्को णण्णमणो अप्पणं सहावेण।
जाणदि पस्सदि णियदं सो सगचरियं चरदि जीवो।।१५८।।

(हरिगीत)

जो सर्व संगविमुक्त एवं अनन्य आत्मस्वभाव से।
जाने तथा देखे नियत रह उसे चारित्र है कहा।।१५८।।

आचार्य श्री कुन्दकुन्ददेव मूल गाथा में कहते हैं कि जो सर्व संग से मुक्त और अनन्य मनवाला वर्तता हुआ आत्मा का ज्ञान–दर्शन रूप स्वभाव द्वारा नियतरूप से (स्थिरतापूर्वक) स्वयं को जानता–देखता है, वह जीव स्वचारित्र आचरता है।

आचार्य अमृतचन्द्र स्वामी समय व्याख्या टीका में कहते हैं कि यह स्वचारित्र में प्रवर्तन करने वाले के स्वरूप का कथन है।

जो जीव वास्तव में निरूपराग उपयोग वाला अर्थात् शुद्ध उपयोग वाला होने के कारण सर्वसंग मुक्त वर्तता हुआ परद्रव्य से विमुख होने के कारण अनन्य मनवाला अर्थात् जिसकी परिणति अन्य के प्रति नहीं है ऐसा वर्तन करता हुआ आत्मा को अपने ज्ञान–दर्शन स्वभाव के द्वारा नियत रूप से अर्थात् अवस्थित रूप से जानता–देखता है, वह जीव वास्तव में स्वचारित्र आचरता है; क्योंकि वास्तव में आत्मा में सामान्य अवलोकन रूप से वर्तना स्व–चारित्र है।

तात्पर्य यह है कि जो जीव शुद्धोपयोग में वर्तता है और जिसकी परिणति पर की ओर नहीं जाती तथा आत्मा को स्वाभाविक ज्ञान–दर्शन परिणाम द्वारा स्थिरतापूर्वक जानता–देखता है, वह जीव स्व–चारित्र का आचरण करनेवाला है; क्योंकि दर्शन–ज्ञान स्वरूप आत्मा में मात्र दर्शन ज्ञानरूप से परिणमित होकर रहना स्वचारित्र है।

कवि हीरानन्दजी उक्त कथन को अपनी काव्य की भाषा में कहते हैं –

(दोहा)

सकल संग परिहरण करि, एकपना जो आप।
जानै–देखै नियत सो, स्व–समय जीव प्रताप।।२०२।।

(सवैया इकतीसा)

सुद्ध उपयोग जान्या सब संग मैल मान्या,
पररूप त्यागा आप रूप एक मनसा।
अपना सुभाव एक दृग ज्ञान रूप ताकौं,
देखै जानै आन और देखै है सुपन सा।।
सोई स्वचारित्र चारी आप मैं विहारी जीव,
तिनही मोख जाने की कीनी है सुगमता।
तातैं दृग–ज्ञान–रूप आत्मा सरूप सारा,
चारित सुकीय धारा सुद्ध है गगन सा।।२०३।।

(दोहा)

दरसन ज्ञान सरूप मैं, आपरूप गत जीव।
सोई स्वचरित जानिए, स्व–समयरूप सदीव।।२०४।।

कवि हीरानन्दजी उक्त काव्यों में चारित्र का स्वरूप प्रतिपादित करते हुए कहते हैं कि जीव स्व–समय की श्रद्धा के प्रताप से जगत के मात्र ज्ञाता–दृष्टा रह जाते हैं तथा सकल परिग्रह का त्याग कर अपने एकत्व स्वरूप को प्राप्त कर लेते हैं।

अपने शुद्धोपयोग को अपना कर समस्त परिग्रह को मैल मानते हैं। सम्यग्दर्शन–ज्ञान–चारित्र रूप अपने स्वभाव को अपना कर अपने स्वरूप में ही रमते–जमते हैं और मोक्षमार्ग सुगम कर लेते हैं।

गुरुदेव श्रीकानजीस्वामी ३०–५–५२ के व्याख्यान में उक्त गाथा पर प्रवचन करते हुए कहते हैं कि सम्यक्चारित्र मोक्षमार्ग है, वह सम्यक्–दर्शन–ज्ञानपूर्वक होता है। मुनि अन्तरबाह्य परिग्रह से रहित होते हैं। निश्चय से स्वरूप की एकाग्रता ही चारित्र है।

आचार्य श्री जयसेन स्वामी अपनी टीका में लिखते हैं कि मुनि संग विमुक्त होते हैं। उनके तीनों कालों में तीन लोक के समस्त पदार्थों के प्रति उदासीनता रहती है। पाँचों पापों का मन–वचन–काय कृत–कारित अनुमोदना आदि नव प्रकार से त्याग रहता है। चैतन्य में से वीतरागता का आनन्द प्रवाहित होता है। आत्मा के प्रदेश–प्रदेश से आनन्द का अमृत झरता है। ऐसी मुनिदशा होती है। वे मुनि सहजानन्द का अनुभव करते हैं।

तात्पर्य यह है कि आत्म स्वभाव में, निजगुण–पर्यायों में निश्चल स्वरूप का अनुभव करने वाले मुनियों को स्वसमय कहते हैं। इसी अवस्था का नाम स्व–चारित्र हैं। यही मुक्तिमार्ग है, अर्थात् इसी मार्ग से मुक्ति की प्राप्ति होती है। ●

कहानी लेखन प्रतियोगिता

दादी–नानी से सुनी हुई या दादी–नानी को सुनाने के लिए कहानियाँ सबको उपलब्ध हों इस उद्देश्य से एक कहानी लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है, जिसके नियम निम्नानुसार है –

1. कहानी पौराणिक या काल्पनिक हो परन्तु वह जैनदर्शन के सिद्धांतों/नैतिकता की शिक्षा देने वाली हो। 2. कहानी बाल मनोविज्ञान पर आधारित अधिकतम 300 शब्दों की हो। 3. प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त कहानियों को क्रमश: 1000, 700 व 500 रुपये का पुरस्कार दिया जायेगा। साथ ही पुस्तक में प्रकाशन योग्य प्रत्येक कहानी को 200/– रुपये प्रदान किये जायेंगे। 4. कहानी भेजने की अन्तिम दिनांक 31 दिसम्बर 2012 है।

कहानी भेजने का पता – समर्पण, ध्रुवधाम, पो. कूपड़ा, जिला बांसवाड़ा (राज.) मो. 08003639039 / अमित जैन कोलकता 09831665857

नवीन प्रकाशन

डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई द्वारा आत्मानुभूति कैसे ? (मूल्य 10 रुपये) एवं नयचक्र गाइड (मूल्य 7 रुपये) उपलब्ध है।

'नयचक्र गाइड' में अध्यात्म की दृष्टि से उपयोगी अध्यात्म के नयों की समस्त जानकारी सरल शब्दों में संक्षेप में प्रस्तुत की गई है। नयों के भेद–प्रभेदों का अन्तर चार्ट के माध्यम से बताया गया है, जिससे नयों का अंतर प्रतिदिन पाठ कर आसानी से याद रखा जा सकता है।

'आत्मानुभूति कैसे ?' पुस्तक में हमें आत्मानुभूति के लिये क्या करना चाहिये ? विषय को सरल शब्दों, रोचक शैली व संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है। आत्मानुभूति के मार्ग में आने वाली अटकन, भटकन और उलझन को उदाहरणों द्वारा स्पष्ट किया गया है।

प्राप्ति स्थान–पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए–4,बापूनगर,जयपुर (राज.)

प्रशिक्षण शिविर देवलाली में

प्रतिवर्ष ग्रीष्मकाल में लगने वाला प्रशिक्षण शिविर इस वर्ष दिनांक 19 मई से 5 जून 2013 तक देवलाली–नासिक (महा.) में आयोजित होने जा रहा है। जयपुर शिविर के दौरान देवलाली ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री कान्तिभाई मोटानी एवं पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली आदि ने प्रशिक्षण शिविर में देवलाली पधारने हेतु समस्त उपस्थित मुमुक्षु समाज को हार्दिक आमंत्रण दिया।

भगवान महावीर के निर्वाण महोत्सव के अवसर पर जैनपथप्रदर्शक के सभी पाठकों को हार्दिक शुभकामनायें।

(पृष्ठ 1 का शेष ...)

पण्डित निलयजी शास्त्री आगरा, पण्डित प्रवीणजी शास्त्री खैरागढ, पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित वीरेन्द्रजी, पण्डित रमेशजी जैन लवाण, पण्डित सतीशजी कासलीवाल इन्दौर, विदुषी शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई आदि विशिष्ट विद्वानों के प्रवचनों का लाभ मिला।

विशिष्ट कार्यक्रम – टोडरमल स्नातक परिषद् एवं अखिल भारतवर्षीय विद्वत्परिषद् द्वारा क्रमबद्धपर्याय विषय पर गोष्ठी दिनाँक 21से 23 अक्टूबर तक रखी गई। दिनाँक 24 अक्टूबर को अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का अधिवेशन किया गया।

श्री टोडरमल महाविद्यालय में अध्ययनरत छात्रों के अभिभावकों की मीटिंग दिनांक 26 व 27 अक्टूबर को रखी गई, जिसमें छात्रों के अभिभावकों ने महाविद्यालय के अध्यापकों के साथ मिलकर अपने बालकों की प्रगति की जानकारी ली।

सायंकाल बालकक्षा विदुषी शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई के निर्देशन में चलाई गई।

शिविर एवं विधान के आमंत्रणकर्त्ता श्रीमती रतनबाई ध.प. स्व. श्री राजमलजी पाटनी की स्मृति में सुपुत्र श्री अशोककुमारजी पाटनी परिवार कोलकाता थे। शिविर के आमंत्रणकर्ता श्री दि.जैन मुमुक्षु मण्डल कोलकाता, श्रीमती अमृतबेन ध.प. स्व. श्री बेलजीलाल शाह मुम्बई, श्रीमती सुनीता ध.प. श्री प्रेमचंदजी बजाज एवं सुपुत्र तन्मय–ध्याता बजाज परिवार कोटा थे।

इस शिविर में विद्यमान 20 तीर्थंकर विधान का आयोजन पण्डित सोनूजी शास्त्री के निर्देशन में किया गया। विधान में मुख्य मंगल कलश के विराजमानकर्ता श्री सुरेशजी जैन शिवपुरी परिवार थे।

शिविर समापन समारोह में शिविर की रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुये पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर ने कहा कि शिविर में 36 विद्वानों के माध्यम से लगभग 700 साधर्मियों ने प्रतिदिन 16 घंटे तक चलने वाले तत्त्वज्ञान के कार्यक्रमों का लाभ लिया। लगभग 26 हजार 500 घंटों के सी.डी./डी.वी.डी. प्रवचन तथा 15 हजार रुपयों का सत्साहित्य घर–घर पहुंचा।●

महाविद्यालय का सुयश

श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धांत महाविद्यालय के विद्यार्थी समय–समय पर मेरिट लिस्ट में अपना स्थान बनाते आये हैं। इसी क्रम में वर्ष 2011–12 के परीक्षा परिणाम में राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान की मेरिट लिस्ट में **कु. श्रुति जैन पुत्री पण्डित राकेशजी शास्त्री दिल्ली ने प्रथम स्थान** एवं **कु. प्रतीति पाटील पुत्री पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर ने तृतीय स्थान** प्राप्त किया है।

इस उपलब्धि हेतु टोडरमल महाविद्यालय एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

श्री प्रदीपजी जैन 'आदित्य' का अभिनन्दन

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में 15वें आध्यात्मिक शिक्षण शिविर के अवसर पर दिनांक 26 अक्टूबर को प्रात: श्री प्रदीपजी जैन 'आदित्य' (ग्रामीण विकास राज्यमंत्री, भारत सरकार) को 'समाजरत्न' की उपाधि देकर सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर आयोजित सभा की अध्यक्षता श्री सुशीलकुमारजी गोदिका जयपुर ने की। मुख्य अतिथि के रूप में जस्टिस नगेन्द्रकुमारजी जैन (अध्यक्ष–अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी) एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री एन.के. सेठी जयपुर, श्री महेन्द्रकुमारजी पाटनी जयपुर (केन्द्रीय उपाध्यक्ष–दि.जैन महासमिति), श्री पानाचन्दजी जैन जयपुर (पूर्व न्यायाधीश), श्री ज्ञानचन्दजी झांझरी (अध्यक्ष–पदमपुराक्षेत्र), श्री विवेकजी काला जयपुर (पूर्व अध्यक्ष–महासमिति), श्री अनिलजी जैन (डी.एस.पी. जयपुर), श्री महेन्द्रकुमारजी चौधरी भोपाल, श्री मुकेशजी जैन ढाईद्वीप इन्दौर, श्री कान्तिभाई मोटानी मुम्बई, श्री विपुलभाई मोटानी मुम्बई एवं कुंवर नगेन्द्र सिंह राठौर दिल्ली मंचासीन थे। विद्वत्वर्ग में डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, ब्र. यशपालजी जैन जयपुर, पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा इन्दौर, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, डॉ. मनीषजी शास्त्री रहली, श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित कमलचन्दजी पिड़ावा आदि महानुभाव उपस्थित थे।

कार्यक्रम में श्री प्रदीपजी जैन का परिचय श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर ने दिया। तत्पश्चात् उनका तिलक लगाकर, माल्यार्पणकर, शॉल ओढाकर, श्रीफल व प्रशस्ति–पत्र भेंट कर सम्मान किया गया। प्रशस्ति–पत्र का वांचन पण्डित संजीवजी गोधा ने किया।

इस अवसर पर जस्टिस नगेन्द्रजी जैन, श्री एन.के. सेठी, जस्टिस पानाचन्दजी जैन, कुंवर नगेन्द्र सिंह राठौर एवं श्री मुकेशजी जैन ढाईद्वीप इन्दौर के उद्बोधन का लाभ मिला।

श्री प्रदीपजी जैन ने अपने उद्बोधन में कहा कि डॉ. भारिल्लजी के विद्यार्थी अपने जीवनभर जिनवाणी का प्रचार–प्रसार करते हैं। इन्हीं विद्यार्थियों के कारण समाज उन्नति कर रहा है। इनका प्रत्येक विद्यार्थी एक चलती फिरती संस्था है जो समाज ही नहीं पूरे देश में सत्य, अहिंसा और संयम का उपदेश दे रहे हैं। डॉ. भारिल्ल को मैं नमन करता हूँ, वे एक ऐसी विभूति हैं जिनने आज 650 विद्यार्थियों को गढा है या ऐसा कहें कि उनने इतनी चलती फिरती संस्थायें बना दी है और बनाते जा रहे हैं। उनका समाज पर बहुत उपकार है। डॉ. भारिल्ल ने जो साहित्य लिखा है, वह बेजोड़ है। मैं चाहता हूँ कि डॉ. भारिल्ल की जन्मस्थली बरौदास्वामी जो कि हमारे ही चुनावक्षेत्र में है, में एक विश्वस्तरीय शोध संस्थान बनना चाहिये। आप सभी इस दिशा में सोचें, मैं मन्त्रालय स्तर पर जो भी संभव होगा अधिकतम सहयोग करने का प्रयत्न करूँगा।

डॉ. भारिल्ल ने अपने उद्बोधन में कहा कि श्री प्रदीपजी जैन ने समाज की उन्नति एवं तत्त्वप्रचार में बहुत सहयोग दिया है; अत: आज इन्हें 'समाज रत्न' की उपाधि देकर सम्मानित किया जा रहा है।

कार्यक्रम का संचालन श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने एवं मंगलाचरण कु. परिणति पाटील ने किया।

क्रमबद्धपर्याय विषयक विद्वत्संगोष्ठी संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में चल रहे 15वें आध्यात्मिक शिक्षण शिविर के अवसर पर दिनांक 21-23 अक्टूबर तक अखिल भारतवर्षीय विद्वत्परिषद एवं श्री टोडरमल स्नातक परिषद के संयुक्त तत्त्वावधान में एक विद्वत्संगोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी का विषय था - **क्रमबद्धपर्याय**। इसमें लगभग 14 विद्वानों ने क्रमबद्धपर्याय विषय के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डाला।

जैनधर्म के प्रमुख सिद्धांतों में से एक है क्रमबद्धपर्याय अर्थात् यह जगत पूर्ण रूप से सुनियोजित एवं सुव्यवस्थित है। कोई इस जगत का कर्ता-धर्ता-हर्ता नहीं है। इस जगत में प्रत्येक द्रव्य का परिणमन स्वतंत्र है और अपने समय पर उसका जैसा परिणमन होना होता है, वैसा ही होता है।

इस संगोष्ठी में कई बिन्दु उभर कर आए, जिनमें से प्रमुख निम्न हैं-

1. इस जगत में प्रत्येक द्रव्य स्वतंत्र रूप से परिणमित होता है। कोई इसका कर्ता-धर्ता-हर्ता नहीं है। षट् द्रव्यमयी इस जगत की व्यवस्था स्वसंचालित है।

2. इस जगत के प्रत्येक द्रव्य का जिस क्षेत्र में, जिस काल में, जिस भावरूप जो परिणमन होना होता है, वही होता है। द्रव्य का यह परिणमन अनादिकाल से सुनिश्चित है। किसी के परिणमन कराने से द्रव्य परिणमित नहीं होता।

3. इस जगत का जैसा परिणमन अनादि काल से सुनिश्चित है, वैसा केवली भगवान जानते हैं। केवली भगवान के जानने से जगत का परिणमन सुनिश्चित नहीं होता; अपितु सुनिश्चित परिणमन को वे जानते हैं। केवली भगवान भी द्रव्यों के अनादि काल से निश्चित परिणमन को परिवर्तित नहीं कर सकते।

4. संसार का प्रत्येक जीव पर में फेरफार की भावना के कारण दु:खी है, पर पदार्थों में फेरफार कर सुखी होना चाहता है; परन्तु इस सिद्धांत से सिद्ध होता है कि प्रत्येक द्रव्य का परिणमन अनादि काल से सुनिश्चित है; अत: परद्रव्य में फेरफार करने का प्रयत्न निष्फल है।

5. इस सिद्धांत को जानने से पुरुषार्थ की हीनता नहीं होती; अपितु पर कर्तृत्व का अनंतभार हट जाने से दृष्टि स्वसन्मुख होकर अनंत ज्ञान व अनंत सुख उत्पन्न होता है।

6. किसी जीव की मृत्यु बाल्यावस्था में हो जाये तो यह अकाल मृत्यु नहीं; अपितु स्वकाल में हुई मृत्यु है; क्योंकि उस जीव का ऐसा परिणमन अनादि काल से निश्चित था।

7. इस सिद्धांत को समझने से ही प्रत्येक जीव अपने जीवन में सुख-शान्ति को प्राप्त कर सकता है; क्योंकि इसे समझने से पर में अपनत्व, ममत्व, कर्तृत्व व भोक्तृत्व बुद्धि हट जाती है, सुख बुद्धि हट जाती है, जिससे दृष्टि स्व सन्मुख होती है और जीव अनंत सुख को प्राप्त करता है।

8. इस सिद्धांत के कारण जीव स्वच्छंद हो जाये एवं विषय-भोगों में रम जाये तो यह उसी की भूल होगी। यह सिद्धांत तो पर-पदार्थों व विषय-भोगों से दृष्टि हटाकर स्वद्रव्य में दृष्टि करना सिखाता है, स्वाधीन होना सिखाता है।

9. इस सिद्धांत का नाम क्रमबद्धपर्याय, क्रमनियमित, सुव्यवस्थित व्यवस्था, निश्चित व्यवस्था, निश्चित परिणमन आदि अनेक हो सकते हैं अर्थात् जिस शब्द से इस सिद्धांत के भाव का ज्ञान हो, वही नाम इसे दिया जा सकता है।

दिनांक 21 अक्टूबर को प्रथम सत्र की अध्यक्षता पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री कान्तिलालजी बड़जात्या रतलाम मंचासीन थे। गोष्ठी के अन्तर्गत पण्डित मनीषजी कहान शास्त्री जयपुर ने **'क्रमबद्धपर्याय का स्वरूप'** विषय पर, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा ने **'क्रमबद्धपर्याय की स्वीकार्यता में मुख्य बाधा : दुराग्रह'** विषय पर एवं डॉ. श्रीयांसजी शास्त्री जयपुर ने **'कार्य का कर्ता कौन : पाँच समवाय'** विषय पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। संचालन पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील ने एवं मंगलाचरण पण्डित मयंकजी शास्त्री अमरमऊ ने किया।

दिनांक 22 अक्टूबर को द्वितीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. पी.सी. जैन जयपुर ने की। मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. जयकुमार शान्तिनाथ शेटे मंचासीन थे। गोष्ठी के अन्तर्गत डॉ. पी.सी. जैन जयपुर ने **'क्रमबद्धपर्याय : स्वच्छन्दता या स्वाधीनता'** विषय पर, डॉ. नीतेशजी शास्त्री जयपुर ने **'पर्यायें क्रमनियमित या क्रमबद्ध'** विषय पर, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री ने **'क्रमबद्धपर्याय और आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी'** विषय पर, डॉ. भागचन्दजी शास्त्री जयपुर ने **'सदी का बहुचर्चित विषय क्रमबद्धपर्याय'** विषय पर एवं डॉ. राजेन्द्रजी बंसल अमलाई ने **अकालनय : क्रमबद्धपर्याय** विषय पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। संचालन पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर एवं मंगलाचरण पण्डित स्वतंत्रजी शास्त्री ने किया।

दिनांक 23 अक्टूबर को तृतीय सत्र डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के सानिध्य में संपन्न हुआ, जिसकी अध्यक्षता पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री दिलीपभाई शाह जयपुर मंचासीन थे। गोष्ठी के अन्तर्गत पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील ने **'सहजकर्तृत्व, अकर्तृत्व, स्वकर्तृत्व'** विषय पर, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा ने **'पुरुषार्थ और क्रमबद्धपर्याय'** विषय पर, डॉ. मनीषजी शास्त्री खतौली ने **'सर्वज्ञता और क्रमबद्धपर्याय'** विषय पर, पण्डित प्रवीणजी शास्त्री रायपुर ने **'क्रमबद्धपर्याय की करणानुयोग द्वारा सिद्धि'** विषय पर एवं डॉ. नरेन्द्रजी शास्त्री जयपुर ने **'क्रमबद्धपर्याय की प्रथमानुयोग द्वारा सिद्धि'** विषय पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। संचालन पं. राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा एवं मंगलाचरण पण्डित अजितजी शास्त्री ने किया।

इसप्रकार यह त्रिदिवसीय संगोष्ठी क्रमबद्धपर्याय विषय पर सांगोपांग विवेचन के साथ अत्यंत सफलता पूर्वक सम्पन्न हुई। इस गोष्ठी की सभी शिविरार्थियों ने प्रशंसा की एवं शिविरों में इसप्रकार गोष्ठियों के आयोजन के अभिनव प्रयोग की सराहना की।

रहस्य : रहस्यपूर्ण चिट्ठी का

104 पाँचवाँ प्रवचन -डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

संतप्त मानस शांत हों, जिनके गुणों के गान में।
वे वर्द्धमान महान जिन, विचरें हमारे ध्यान में।।

पण्डित टोडरमलजी द्वारा लिखित रहस्यपूर्णचिट्ठी पर चर्चा चल रही है। विगत प्रवचन में यह स्पष्ट हो चुका है कि पहले शुद्धात्मतत्त्व के निरूपक शास्त्रों के अध्ययन और उनके मर्म को जाननेवाले गुरुओं के संबोधन से विकल्पात्मक ज्ञान में शुद्धात्मतत्त्व का वास्तविक स्वरूप ख्याल में आता है। उसके बाद वह शुद्धात्मतत्त्व का ज्ञान सविकल्प से निर्विकल्परूप परिणमित होता है। सविकल्प से निर्विकल्प होने की सम्पूर्ण प्रक्रिया कैसे सम्पन्न होती है - इसकी चर्चा विस्तार से हो गई है।

अब प्रश्न यह है कि आरंभ में तो आप देव-शास्त्र-गुरु की बात कर रहे थे; पर अन्त में आते-आते मात्र शास्त्रों के अध्ययन और ज्ञानी गुरुओं के श्रवण की बात करने लगे, देव को छोड़ दिया। इसका क्या कारण है ?

अरे, भाई ! तीनों की ही बात है। बात यह है कि **इस युग में अरहंत देव का सत्समागम इस क्षेत्र में संभव नहीं है; पर उनकी वाणी शास्त्रों के रूप में हम सभी को सहज ही उपलब्ध है और उसके प्रवक्ता भी कहीं-कहीं मिल ही जाते हैं। इसलिए शास्त्र और गुरु की बात मुख्य हो गई।**

दूसरी बात यह भी तो कि **अरहंतदेव भी परमगुरु ही हैं;** क्योंकि उनकी दिव्यध्वनि खिरती है, वे हमें तत्त्व समझाते हैं।

शास्त्र के पहले बोले जानेवाले मंगलाचरण में आता है -

"**परमगुरवे नमः, परम्पराचार्यगुरवे नमः -** परमगुरु को नमस्कार हो, परम्पराचार्यगुरु को नमस्कार हो।"

उक्त कथन के अनुसार जब आचार्यदेव परम्परागुरु हैं तो अरहंतदेव के अतिरिक्त और कौन है, जिसे मूलरूप से परमगुरु माना जाय?

शास्त्र और गुरु की प्रामाणिकता का मूल आधार तो परमगुरु अरहंतदेव ही हैं।

सोलहकारण पूजन में भी अरहंतदेव को परमगुरु कहा गया है; जो इसप्रकार है -

दरशविशुद्धिभावना भाय, सोलह तीर्थंकर पद पाय।
परमगुरु होय जय-जय नाथ परमगुरु होय।।

हे तीर्थंकर अरहंत भगवान ! आपने दर्शनविशुद्धि आदि सोलहकारण भावनाओं को भाकर तीर्थंकर पद प्राप्त करके परमगुरु अवस्था अर्थात् अरहंत अवस्था को प्राप्त किया है। आपकी जय हो, जय हो।

सोलहकारण पूजन वस्तुतः सोलहकारण भावनाओं की पूजन नहीं है; क्योंकि सोलहकारण भावनायें तो तीर्थंकर प्रकृति के बंध की कारण हैं। जैनदर्शन में बंध के कारणों की पूजा नहीं होती, अपितु बंध के अभाव के कारणरूप रत्नत्रय की और रत्नत्रयधारकों की पूजा होती है। **जिसे आप सोलहकारणपूजन कहते हो, वह पूजन उन परमगुरु अरहंतदेव की है, जो सोलह कारण भावनायें भाकर तीर्थंकर पद को प्राप्त हुए हैं।** यह बात उक्त पंक्तियों से स्पष्ट है।

पंचपरमेष्ठियों के वर्गीकरण दो प्रकार से प्राप्त होते हैं। प्रथम वर्गीकरण में अरहंत और सिद्ध को देव तथा आचार्य, उपाध्याय और साधुओं को गुरु में शामिल किया जाता है। दूसरे वर्गीकरण में मात्र **सिद्ध भगवान ही देव हैं और अरहंत, आचार्य, उपाध्याय और साधु गुरु हैं।**

दूसरे वर्गीकरण का आधार यह है कि आत्मा की पूर्ण अमल-अचल सिद्धपर्यायधारी सिद्ध भगवान ही देव हैं; क्योंकि वे हमारे आदर्श हैं, हमें उन जैसा बनना है। अरहंत भगवान चार घातिया कर्मों के सद्भाव में होनेवाले मोह-राग-द्वेष और अल्पज्ञता के अभाव से वीतरागी-सर्वज्ञ तो हो गये हैं, अमल तो हो गये हैं; पर अभी अघातिया कर्मों के सद्भाव के कारण अचल नहीं हुए। तात्पर्य यह है कि **सिद्ध भगवान अमल होने के साथ-साथ अचल भी हैं, पर अरहंत भगवान अमल तो हैं, पर अचल नहीं।**

इसकारण अरहंत भगवान को भी परमगुरु के रूप में गुरुओं में शामिल किया गया है।

सिद्ध भगवान की दिव्यध्वनि नहीं खिरती; अतः वे तो हमारे लिए मात्र आदर्श हैं; पर परमगुरु अरहंतदेव की दिव्यध्वनि खिरती है; अतः वे परमोपकारी परमगुरु हैं।

वस्तुस्वरूप का निर्णय प्रमाण और नयों के द्वारा होता है। प्रत्यक्ष और परोक्ष के भेद से प्रमाण दो प्रकार के होते हैं। मतिज्ञान और श्रुतज्ञान परोक्ष प्रमाण हैं। मति, स्मृति, प्रत्यभिज्ञान, तर्क और अनुमान मतिज्ञान के ही रूप हैं; क्योंकि इन सभी में मतिज्ञानावरण कर्म का क्षयोपशम निमित्त होता है।

श्रुतज्ञान आगम प्रमाण है। श्रुतज्ञानरूप आगम प्रमाण का आधार परमगुरु अरहंतदेव की वाणी है; इसलिए परमगुरु अरहंतदेव की वाणी के अनुसार ज्ञानीजनों द्वारा लिखे गये शास्त्रों को आगम कहा जाता है।

इसप्रकार परमगुरु अरहंतदेव और परम्परागुरु आचार्यदेव आदि द्वारा प्रतिपादित आगम ही शास्त्र हैं। इसप्रकार **शास्त्र और शास्त्रानुसार की गई ज्ञानी गुरुओं की देशना ही वह आधार है; जो हमें विकल्पात्मक ज्ञान में वस्तुतत्त्व का सही स्वरूप समझने में निमित्त है।**

अतः हमने जो आगम के सेवन, युक्ति के अवलंबन और परम्परा गुरुओं के उपदेश से वस्तुस्वरूप का - आत्मवस्तु का निर्णय किया है;

वह भी प्रमाण है; स्मृति, प्रत्यभिज्ञान, तर्क, अनुमान और आगम भी प्रमाण हैं, प्रमाण के भेद हैं। इन्हीं के आधार पर प्रत्यक्ष अनुभव का मार्ग प्रशस्त होता है।

यहाँ एक प्रश्न हो सकता है कि प्रत्यक्ष अनुभव के बिना ये परोक्षज्ञान तो अप्रमाण ही है न ?

उत्तर : यद्यपि यह सत्य है कि आत्मानुभव के बिना सम्यग्ज्ञान उत्पन्न नहीं होता। इसलिए सम्यग्ज्ञान है लक्षण जिसका ऐसा प्रमाण अनुभवहीन ज्ञान कैसे हो सकता है; तथापि **आगमज्ञान की प्रामाणिकता तो परमगुरु अरहंतदेव के आधार से है; उसके ज्ञान के आधार से नहीं, जिसे देशनालब्धि प्राप्त हो रही है।**

जिस अनुभवज्ञान को प्रत्यक्ष कहा जा रहा है; उसके प्रत्यक्षपने के संदर्भ में विशेष स्पष्टीकरण आगे स्वयं पण्डित टोडरमलजी इसी रहस्यपूर्ण–चिट्ठी में विस्तार से करनेवाले हैं।

जब कोई मैनेजर या मुनीम किसी फर्म (सेठ) की ओर से कोई पत्र लिखता है; तो उस पत्र की विश्वसनीयता फर्म (सेठ) के आधार पर होती है; मैनेजर या मुनीम के आधार पर नहीं। उस पत्र के प्रभाव से होने वाला हानि–लाभ भी फर्म (सेठ) को होता है, मुनीम या मैनेजर को नहीं।

इसीप्रकार जब कोई व्यक्ति वस्तुस्वरूप का प्रतिपादन आगमानुसार करता है तो उसकी प्रामाणिकता आगम के आधार से होती है, उस व्यक्ति के आधार से नहीं। इसप्रकार आचार्य, उपाध्याय और साधुगण तथा ज्ञानी धर्मात्मा – **सभी छद्मस्थों द्वारा लिखित या निरूपित वस्तुस्वरूप की प्रामाणिकता का आधार एकमात्र अरहंत सर्वज्ञ परमात्मा और उनकी दिव्यध्वनि ही है।**

जिसप्रकार आज के विज्ञान के अनुसार सूर्य की रोशनी तो स्वयं की है, वह तो स्वयं से ही प्रकाशित है; पर चन्द्रमा की रोशनी स्वयं की नहीं है। जब सूर्य की किरणें उस पर पड़ती हैं, तब वह उनसे प्रकाशित होता है, चमकता है।

उसीप्रकार केवलज्ञानरूपी सूर्य से सम्पन्न अरहंत भगवान तो स्वयं से प्रमाणित हैं। उन्हें अपनी बात को प्रमाणित करने के लिए किसी दूसरे का प्रमाण प्रस्तुत करने की आवश्यकता नहीं है; परन्तु शेष सभी छद्मस्थ क्षयोपशम ज्ञानी गणधरदेव, आचार्य, उपाध्याय और साधुवर्ग तथा ज्ञानी धर्मात्मा श्रावकों की बात अरहंत भगवान की दिव्यध्वनि के आधार पर ही प्रमाणित होती है। यही कारण है कि सभी ज्ञानी धर्मात्मा अपनी बात को प्रमाणित करने के लिए अपने पूर्ववर्ती प्रामाणिक आचार्यों, सन्तों और ज्ञानियों के कथनों को उद्धृत करते हैं।

यहाँ तक कि कुन्दकुन्दाचार्य जैसे समर्थ आचार्य भी – **जिणेहिं निद्दिट्ठं**=जिनेन्द्रदेव ने कहा है; **भणिदा खलु सव्वदरसीहिं**=सर्वदर्शी जिनेन्द्रदेव द्वारा कहा गया है – इसप्रकार कहकर अपनी बात की प्रामाणिकता को प्रस्तुत करते हैं।

आजकल कुछ लोग कहने लगे हैं कि आचार्यों की बात ही प्रामाणिक है; गृहस्थ विद्वानों की नहीं। इसप्रकार वे महापण्डित टोडरमलजी जैसे दिग्गज विद्वानों के कथनों की उपेक्षा करना चाहते हैं, उनके कथनों को अप्रमाणिक बताना चाहते हैं; जो किसी भी दृष्टि से उचित नहीं है।

वे यह नहीं सोचते कि वे स्वयं भी तो विद्वान हैं। क्या उनके कथनों को सही नहीं माना जाय ? यदि हाँ तो फिर उनके इस कथन को भी कैसे स्वीकार किया जा सकता है।

(क्रमशः)

समयसार ताम्रपत्र पर उत्कीर्ण

आचार्य कुन्दकुन्द द्वारा विरचित समयसार परमागम की सुरक्षा व बहुमान की भावना से ताम्रपत्र पर मूल 415 गाथायें उत्कीर्ण कर उसे स्थायी रूप प्रदान करने का कार्य श्री मनोजकुमारजी जैन मुजफ्फरनगर द्वारा किया गया है, जिसका विमोचन दिनांक 22 अक्टूबर को डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा किया गया। ताम्रपत्र पर समयसार उत्कीर्ण कराने हेतु **संपर्क करें – श्री मनोज कुमार जैन** फोन नं.– 07599301008 E-mail : ptmanojjain@gmail.com

हार्दिक बधाई !

1. टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक पण्डित स्वप्निलजी शास्त्री नागपुर द्वारा पुत्री जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में जैनपथप्रदर्शक हेतु 250/– रुपये प्राप्त हुये।

2. श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धांत महाविद्यालय के स्नातक पण्डित बाबू शास्त्री नल्लूर तमिलनाडु ने दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा द्वारा आयोजित बी.एड. परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त कर स्वर्ण पदक प्राप्त किया। आपको दि. 14 अक्टूबर को सम्पन्न दीक्षान्त समारोह में न्यायमूर्ति मल्लीमत और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष श्री वेदप्रकाशजी के सानिध्य में 'श्री विश्वम्भर दयाल गुप्ता' स्वर्ण पदक से भी पुरस्कृत किया गया।

इस उपलब्धि पर टोडरमल महाविद्यालय एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

रेल सुविधा प्रारम्भ

श्रवणबेलगोला से मैसूर के लिये रेल सुविधा प्रारम्भ हो चुकी है, जिसका किराया मात्र 25 रूपये है। यह रेल मैसूर से प्रातः 11.30 बजे निकलकर दोपहर 3.30 बजे श्रवणबेलगोला पहुँचती है तथा दोपहर 3.50 बजे श्रवणबेलगोला से चलकर रात्रि 8 बजे मैसूर पहुँचती है। सभी इस सुविधा का लाभ उठावें।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

10 से 14 नवम्बर	देवलाली	दीपावली
24 से 29 नवम्बर	सम्मेदशिखर	पंचकल्याणक
25 से 30 दिसम्बर	भीलवाड़ा	पंचकल्याणक
18 जनवरी 2013	बरौदास्वामी	शिलान्यास

2 नवम्बर 2012, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-32 / 2012-14

अ.भा.जैन युवा फैडरेशन का –

३३वां राष्ट्रीय अधिवेशन संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में आयोजित 15वें आध्यात्मिक शिक्षण शिविर के अवसर पर 24 अक्टूबर को अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का 33वां राष्ट्रीय अधिवेशन संपन्न हुआ।

इस अवसर पर सभा की अध्यक्षता फैडरेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री विपुल के. मोटाणी मुम्बई ने की। अधिवेशन का उद्घाटन श्री महेन्द्रजी चौधरी भोपाल ने किया । मुख्य अतिथि के रूप में श्री गुलाबचन्दजी कटारिया (पूर्व गृहमंत्री, राज.सरकार) एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री अशोककुमारजी लुहाड़िया मंगलायतन, श्री अशोकजी जैन सुभाष ट्रांसपोर्ट भोपाल, श्री प्रेमचन्दजी गुरहा रायपुर, श्री महाचन्दजी सेठी भीलवाड़ा, श्री शान्तिलालजी चौधरी भीलवाड़ा, श्री देवेन्द्रजी बड़कुल भोपाल, पण्डित शिखरचंदजी विदिशा आदि महानुभाव मंचासीन थे।

तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल इत्यादि विद्वत् समुदाय के अतिरिक्त राष्ट्रीय महामंत्री पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई, कोषाध्यक्ष श्री प्रदीपजी चौधरी किशनगढ, संगठन मंत्री पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, परामर्शदाता पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, राजस्थान प्रदेशाध्यक्ष श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर, राज.प्रदेश उपाध्यक्ष महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित संजीवजी गोधा जयपुर, पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री आगरा, राज.प्रदेश महामंत्री पण्डित राजकुमारजी बांसवाड़ा एवं जयपुर महानगर शाखा के अध्यक्ष श्री संजयजी सेठी, भीलवाड़ा शाखा अध्यक्ष श्री सुकुमारजी जैन एवं श्री प्रमोदजी मोदी मकरौनिया इत्यादि महानुभाव मंचासीन थे।

इस अवसर पर श्री सुकुमारजी जैन ने भीलवाड़ा शाखा की, श्री संतोषजी शास्त्री ने बकस्वाहा शाखा की एवं श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर ने राजस्थान प्रदेश की रिपोर्ट प्रस्तुत की। इसके पूर्व श्री संजयजी सेठी जयपुर ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम में अ.भा. जैन युवा फैडरेशन एवं सर्वोदय अहिंसा अभियान द्वारा प्रकाशित दीपावली पर पटाखे न फोड़ने सम्बन्धी पोस्टर का विमोचन डॉ. भारिल्ल द्वारा किया गया।

मंच संचालन पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई ने एवं मंगलाचरण श्री संजीवजी जैन शाखा उस्मानपुर दिल्ली ने किया।

अनेक ग्रन्थों का विमोचन

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में आध्यात्मिक शिक्षण शिविर के अवसर पर वृहद् द्रव्यसंग्रह, अष्टपाहुड, क्रमबद्धपर्याय, छहढाला का सार, समाधितंत्र प्रवचन, विश्व में जैनधर्म, चौदह गुणस्थान आदि अनेक ग्रन्थों का विमोचन हुआ

सभी साहित्यप्रेमियों से निवेदन है कि साहित्य बिक्री विभाग को ऑर्डर देकर साहित्य मंगा सकते हैं।

श्री टोडरमल दि.जैन सिद्धांत महाविद्यालय का –

परीक्षा परिणाम घोषित

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय का वर्ष 2011 का परीक्षा परिणाम दिनांक 27 अक्टूबर को शिक्षण शिविर में घोषित किया गया, जो निम्नानुसार है–

उपाध्याय कनिष्ठ (11वीं) में प्रथम स्थान विकास जैन बड़ामलहरा एवं द्वितीय स्थान शुभम जैन दिल्ली (बिनौली) ने प्राप्त किया।

उपाध्याय वरिष्ठ (12वीं) में प्रथम स्थान सौरभ जैन कोलारस एवं द्वितीय स्थान नरेश जैन भगवां ने प्राप्त किया।

शास्त्री प्रथम वर्ष में प्रथम स्थान विवेक जैन अमरमऊ एवं द्वितीय स्थान कुलभूषण अम्बेकर जालना ने प्राप्त किया।

शास्त्री द्वितीय वर्ष में प्रथम स्थान अभिषेक जैन इन्दौर एवं द्वितीय स्थान कु. अनुभूति जैन गुना ने प्राप्त किया।

शास्त्री तृतीय वर्ष में प्रथम स्थान कु. प्रतीति पाटील जयपुर एवं द्वितीय स्थान आशीष जैन दूनी ने प्राप्त किया।

उपाध्याय वर्ग में प्रथम स्थान कु. अनुभूति जैन दिल्ली (उपाध्याय कनिष्ठ), शास्त्री वर्ग में प्रथम स्थान कु. श्रुति जैन दिल्ली (शास्त्री तृतीय वर्ष) ने प्राप्त किया।

प्रवीणता सूची में स्थान पाने वाले सभी छात्रों को प्रमाणपत्र एवं नकद राशि देकर पुरस्कृत किया गया।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

प्रकाशन तिथि : 28 अक्टूबर 2012

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, एम.ए. द्वय (जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127